भविष्य की पत्रकारिता की पड़ताल

''मीडिया मीमांसा'' का चौथा अंक आपके सामने है। तीसरे अंक को जो स्वाधीन भारत में मीडिया पर केन्द्रित था पाठकों की भरपूर सराहना मिली है। वर्तमान अंक न्यू मीडिया की चुनौतियों को केन्द्र में रखकर तैयार किया गया है। इंटरनेट ने अभूतपूर्व ऊँचाइयों को स्पर्श किया है और मीडिया के परम्परागत स्वरूप को झकझोर दिया है। यह निर्विवाद है कि भविष्य की पत्रकारिता की हर विधा को न्यू मीडिया में समाहित होना है।

न्यू मीडिया के सभी आयामों को जाँचने, परखनें का काम इस अंक के विद्वान अतिथि सम्पादक श्री बालेन्दु दाधीच ने बड़े कौशल से किया है। यशस्वी पत्रकार श्री दाधीच प्रथम ऑन लाइन समाचार पत्र 'प्रभा साक्षी' के प्रधान संपादक ही नहीं बल्कि न्यू मीडिया के विशेषज्ञ भी हैं। उन्होंने अनेक पोर्टल और उपयोगी साफ्टवेयर भी तैयार किए हैं। गत वर्ष न्यूयार्क के विश्व हिन्दी सम्मेलन में उनके कार्य को सम्मानित किया गया था। विश्वास है यह विशेषांक आपको पसंद आएगा। समय पर न मिल पाने के कारण भाषायी पत्रकारिता का स्तंभ इस बार शामिल नहीं हो पाया है। जिसका हमें खेद है अन्य सभी स्थायी स्तंभ पूर्ववत हैं।

नव संवत्सर की शुभेक्षाओं के साथ।

अच्युतानंद मिश्र

अतिथि संपादक की टिप्पणी

सदियों में एकाध बार आता है ऐसा बदलाव

ऐसा रूपांतरकारी परिवर्तन सदी में एकाध बार ही होता है। सोलहवीं सदी के बाद कई सदियों तक जनसंचार और जनसूचना माध्यम के रूप में प्रिंट मीडिया का एकाधिकार रहा। स्थिर, स्थायी, निश्चिंत, अपरिवर्तित भाव से बढ़ता रहा प्रिंट मीडिया। पिछली सदी के उत्तरार्ध में जाकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने उसकी शांति भंग की। एक दूसरे के लिए खतरा बनने की बजाय उन्होंने पारस्परिक सह-अस्तित्व में सुकून तलाशा और साथ-साथ रहते-बढ़ते रहे। दोनों की अलग-अलग शैलियां, अलग-अलग प्रभाव। मीडिया की निश्चलता में दूसरा बड़ा उद्वेलन आया है- न्यू मीडिया के जरिए। हालाँकि कॉन्टेंट को कम्प्यूटर के करीब लाने का सिलसिला ढाई दशक पहले ही शुरू हो गया था लेकिन 1995 में आम लोगों तक इंटरनेट के प्रसार के साथ न्यू मीडिया का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा।

मीडिया में तकनीक के दखल से आया यह उद्वेलन न सिर्फ पहले से अलग है बल्कि इसके दूरगामी निहितार्थ हैं। यह विषय वस्तु (कॉन्टेंट) के स्वरूप, प्रस्तुति तथा सूचनाओं के डिलीवरी-मैकेनिज्म को ही नहीं बल्कि मीडिया की बुनियादी अवधारणा को भी बदलने की क्षमता रखता है क्योंकि न्यू मीडिया की मूल प्रकृति इंटरएक्टिव है। पारंपरिक मीडिया के 'एक प्रकाशक, अनेक पाठक' वाले एकाधिकारवादी स्वरूप से बड़ी चुनौती मिल रही है। ऐसी चुनौती जो न रेडियो ने दी थी न टेलीविजन ने, और जो मीडिया को आमूलचूल बदल सकती है। लेकिन सिर्फ चुनौती ही क्यों, मीडिया के लिए यह एक बहुमूल्य अवसर भी तो है। अपना विकास व विस्तार करने का, तकनीक के अधिक करीब आने का,पाठकों से सीधे संवाद का और अपने आर्थिक साम्राज्य को फैलाने का भी। भविष्य की ओर दृष्टि रखने वाला कोई भी संस्थान या व्यक्ति इस रोमांचक, निस्सीम और त्वरित माध्यम से असंबद्ध नहीं रह सकता।

सुधीजनों को इस चुनौती का अहसास है। प्रिंट और टेलीविजन की जकड़बंदी से बाहर निकलकर डिजिटल माध्यम की संभावनाओं को अपनाने की होड़ शुरू भी हो गई है। तभी तो बीबीसी अपने 12 लाख घंटों के टेलीविजन कार्यक्रमों का वेबीकरण करने में जुटा है। तभी तो टाइम्स घराने से लेकर छोटीकाशी.कॉम (बीकानेर से संचालित समाचार पोर्टल) तक इंटरनेट पर आ गए हैं। तभी तो सीएनएन-आईबीएन से लेकर एनडीटीवी और टाइम्स नाऊ तक आम लोगों को सिटीजन रिपोर्टर बनाने में जुटे हैं। तभी तो गूगल पचासों लाख पुस्तकों को डाउनलोड करने और सर्च करने लायक बनाने के लिए उनके डिजीटाइजेशन में जुटा है। तभी तो एक्सप्रेसइंडिया से लेकर टाइम्स समूह और सीएनएन से लेकर डीएनए तक ने अपने पाठकों को बेखौफ टिप्पणियाँ करने के लिए ब्लॉगिंग का मंच मुहैया करा दिया है।

कई सदियों का बुजुर्ग मीडिया अचानक नए जमाने की तकनीकी वियाग्रा की शक्ति से ऊर्जावान होकर छैल-छबीला बन रहा है। यह संक्रमण का एक महत्वपूर्ण दौर है जिसमें भागीदारी न करना अदूरदर्शितापूर्ण ही नहीं, घातक भी हो सकता है। बीबीसी की न्यू मीडिया शाखा के प्रमुख एश्ले हाईफील्ड के शब्दों में- पाँच साल बाद सिर्फ वही मीडिया संस्थान बचेंगे जो तेज होंगे। प्रसारकों को उसके लिए अभी से तैयार होना होगा- अपने डिजिटल अधिकार सुरक्षित करने होंगे, समाचार संकलन ब्रांड तैयार करने होंगे, अभिलेखीय सामग्री को (वेबयुग के लिए) तैयार करना होगा और तकनीक में निवेश करना होगा- अन्यथा उन्हें चंद वर्षों में डिजिटल डायनासोर बन जाने के लिए तैयार रहना चाहिए। क्या न्यू मीडिया को वैकल्पिक मीडिया मानकर उससे असंबद्ध रहना संभव है? शायद नहीं क्योंकि न्यू मीडिया वस्तुतः बदलते समय का माध्यम है और यह अन्य सूचना व संचार माध्यमों से अलग, विमुख या स्वतंत्र किस्म की छोटी-मोटी फेनोमेनन नहीं है। यह अब तक के सभी मीडिया स्वरूपों में विशाल, तकनीक-समृद्ध, शक्तिशाली और व्यापक माध्यम है जिसमें पारंपरिक मीडिया को समाहित कर लेने तक की क्षमता और संभावना दोनों है। न्यू मीडिया तो पारंपरिक मीडिया को साथ लेकर आगे बढ़ने की क्षमता रखता है। सूचनाओं को सीमाओं से मुक्त करने वाले हस्तक्षेप का नाम ही न्यू मीडिया है। वह विभिन्न माध्यमों को साथ लाने, उनके बीच अंतर-संबंध विकसित करने, उन्हें परिवर्धित-समृद्ध करने और नई संभावनाओं से जोड़ने वाला माध्यम है। उसका कलेवर इतना विशाल है कि वह एक ही स्थान पर अनेक पारंपरिक मीडिया को साथ आने, अपनी पहचान बनाए रखते हुए अभिव्यक्ति को व्यापक बनाने का अवसर देता है। एक ही वेब पेज पर खबर, उससे जुड़े वीडियो, ऑडियो, तसवीरें, पुरानी खबरों की कड़ियों, पाठकीय टिप्पणियों व चर्चाओं आदि को रखने की उसकी क्षमता सिद्ध करती है कि वह वैकल्पिक माध्यम नहीं, बल्कि व्यापक माध्यम है। वही भविष्य का माध्यम है।

भविष्य के इस माध्यम को लेकर मीडिया मीमांसा ने विशेष अंक निकालने की सामयिक पहल की जिससे जुड़ना मेरे लिए एक आनंददायक व ज्ञानवर्धक अनुभव रहा। 'अतिथि संपादक' के रूप में औपचारिक संपादकीय लिखने और एकाध लेखों के शीर्षक देने तक सीमित रखने की प्रचलित परिपाटी के बजाए पत्रिका के प्रबंधन ने जिस तरह मुझे इस अंक के लिए लगभग सभी संपादकीय अधिकार सौंप दिए वह एक सुखद आश्चर्य था। इस प्रक्रिया में कई सफल और गुणी हस्तियों से मेरा सीधा संपर्क हुआ जिन्होंने मेरे आग्रह पर इस अंक के लिए लिखा भी। मुझे विश्वास है कि उनके व्यावहारिक विचार पत्रकारिता व तकनीकी जगत के छात्रों तथा अन्य जिज्ञासुओं की ज्ञान-पिपासा को शांत करेंगे। मीडिया मीमांसा के साथ-साथ उन सबका भी आभार।

बालेन्दु दाधीच